01 FEBRUARY 2021

PT CARD

संस्कृति IAS

एंटीफ्रीज़र (Antifreezer)

- 'एंटीफ्रीज़र' मोटरवाहन की **शीतलन प्रणाली में प्रयुक्त द्रव के प्रमुख घटकों में से एक** है, जिसे इंजन शीतलक के रूप में भी जाना जाता है। इसका उपयोग **बेहद ठंडे तापमान के दौरान इंजन को सुचारु रूप से संचालित करने के लिये** किया जाता है। इसे जल के साथ मिश्रित करने पर जल का हिमांक अपने स्तर से कम हो जाता है, इस कारण इसका उपयोग उद्योगों में एंटीफ्रीजिंग के लिये किया जाता है।

- यह एक ग्लाइकॉल-आधारित तरल पदार्थ है, जो मुख्य रूप से **एथिलीन ग्लाइकॉल या प्रोपेलीन ग्लाइकॉल** से बना होता है। 'एथिलीन ग्लाइकॉल' एक गंधहीन सिंथेटिक तरल औद्योगिक यौगिक है, जो उपभोक्ता उत्पादों, जैसे- मोटर वाहन शीतलक, हाइड्रोलिक ब्रेक तरल पदार्थ, पेंट, प्लास्टिक, तथा सौंदर्य प्रसाधन आदि में पाया जाता है। इसका उपयोग कार, हवाई जहाज तथा नौकाओं में एंटीफ्रीज और डी-आइसिंग विलेय बनाने के लिये किया जाता है।
- एथिलीन ग्लाइकॉल स्वाद में मीठा होता है, सीमित मात्रा में इसका उपयोग फार्मास्युटिकल उद्योग में भी किया जाता है। यह अंतर्ग्रहण के बाद रासायनिक रूप से विषाक्त यौगिकों में टूट जाता है, इसके उप-उत्पाद केंद्रीय तंत्रिका तंत्र, हृदय तथा गुर्दे को प्रभावित करते हैं। इसका प्रसार सामान्यत: वायु, जल, भोजन, तथा कृषि उत्पादों के माध्यम से होता है।
- इससे गंभीर मेटाबॉलिज़्म एसिडोसिस (ऐसी स्थिति जिसमें शरीर में बहुत अधिक एसिड जमा हो जाता है), गुर्दे की शिथिलता, हाइपरक्लेमिया, (वह स्थिति जिसमें शरीर में पोटेशियम का स्तर सामान्य से अधिक हो जाता है) तथा दृष्टिहीनता हो सकती है। यह तंत्रिका तंत्र को स्थाई रूप से क्षतिग्रस्त कर देता है, जिससे व्यक्ति की मानसिक कार्यक्षमता प्रभावित होती है।

7428085757/58 या मिस्ड-कॉल करें-9555-124-124 www.sanskritiIAS.com

02 FEBRUARY 2021

PT CARD

संस्कृति IAS

मेगा इन्वेस्टमेंट टेक्सटाइल्स पार्क योजना
[Mega Investment Textiles Parks (MITRA) Scheme]

- हाल ही में, वित्त मंत्री ने देश में **वस्त्र क्षेत्र को विनिर्माण व निर्यात का केंद्रबिंदु बनाने तथा प्रमुख वैश्विक निर्यातक बनाने** के उद्देश्य से 'मेगा इन्वेस्टमेंट टेक्सटाइल्स पार्क' की स्थापना का प्रस्ताव दिया है। इसके तहत 3 वर्ष में 7 टेक्सटाइल पार्क स्थापित किये जाने की योजना है।

- ये पार्क विश्व स्तर के बुनियादी ढाँचे तथा प्लग-एंड-प्ले सुविधाओं से युक्त होंगे, जिन्हें वस्त्र उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (Production-Linked Incentive Scheme) योजना के अतिरिक्त स्थापित किया जाएगा। कपड़ा और ऑटोमोबाइल सहित 10 प्रमुख क्षेत्रों के लिये पूर्व में घोषित **पी.एल.आई. योजना भारत को आत्मनिर्भर बनाने, विनिर्माण को बढ़ावा देने और निर्यात बढ़ाने में सहायक** होगी।
- **कृषि के बाद वस्त्र क्षेत्र (Textile Sector) भारत का दूसरा सबसे बड़ा रोज़गार सृजनकर्ता क्षेत्र** है। वस्त्र और परिधान निर्यातक के रूप में विश्व में पाँचवाँ स्थान प्राप्त होने के बावजूद भारत अपनी क्षमता का पूरा प्रयोग नहीं कर पाया है। मित्र योजना वस्त्र उद्योग को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने, बड़े निवेश को आकर्षित करने के साथ-साथ रोज़गार सृजन और वस्त्र निर्यात को बढ़ावा देगी।
- भारतीय वस्त्र उद्योग बांग्लादेश, वियतनाम, तुर्की, पूर्वी यूरोप के देशों– इथियोपिया, मैक्सिको और अन्य अमेरिकी देशों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहा है। केंद्र और राज्य सरकारें आपसी समन्वय स्थापित कर भारतीय वस्त्र उद्योग को प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिये श्रम सुधारों सहित कई कदम उठा रही हैं।

संस्कृति IAS

03 FEBRUARY 2021

PT CARD

उपभोक्ता कल्याण कोष (Consumer Welfare Fund)

- उपभोक्ता कल्याण व सुरक्षा को बढ़ाने, जागरूकता में वृद्धि करने तथा ग्रामीण इलाकों में उपभोक्ता आंदोलन को मज़बूत करने के उद्देश्य से 'उपभोक्ता कल्याण कोष' का गठन किया गया है। इसका गठन केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम, 2017 की धारा 57 के तहत किया गया है।

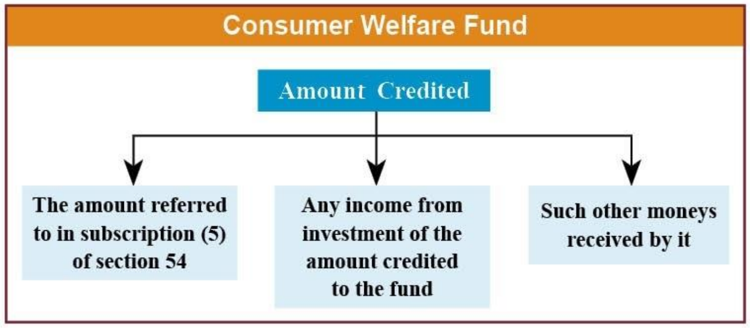

- 'रिफंड' की वह राशि जो आवेदक को देय नहीं है, उसे उपभोक्ता कल्याण कोष में जमा किया जाता है। यहाँ 'रिफंड न की जाने वाली धनराशि' से आशय उस राशि से है, जो आवेदक द्वारा अनुचित तरीके से संग्रहित की जाती है, जैसे– कराघात।
- इस कोष की स्थापना राजस्व विभाग द्वारा की गई है, जबकि इसका संचालन उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय द्वारा किया जाता है।
- इससे पूर्व, केंद्र सरकार को उपभोक्ता कल्याण कोष का गठन करने में सक्षम बनाने के लिये वर्ष 1991 में केंद्रीय उत्पाद शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 में संशोधन किया गया, जिसके अनुसार जो धनराशि निर्माताओं को वापस नहीं की जाती उसे इस कोष में जमा किया जाएगा।
- देश में उपभोक्ता जागरूकता बढ़ाने तथा उपभोक्ताओं के कल्याण में वृद्धि के लिये सरकार ने कई कदम उठाए हैं, जैसे– 'जागो ग्राहक जागो' पैन-इंडिया उपभोक्ता जागरूकता अभियान, ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में विभिन्न मेलों एवं त्योहारों का आयोजन, क्षेत्रीय भाषाओं में जागरूकता फैलाने के लिये राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों को अनुदान देना, विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस/राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस का आयोजन तथा भारतीय मानक ब्यूरो (बी.आई.एस.) मोबाइल केयर ऐप आदि।

04 FEBRUARY 2021

PT CARD

संस्कृति IAS

हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन (Hydrogen Energy Mission)

- बजट 2021-22 में 'हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन' की घोषणा की गई है, जो देश में ऊर्जा क्षेत्र प्रबंधन, कार्बन उत्सर्जन को कम करने, जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के साथ-साथ आर्थिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। विदित है कि वर्तमान में देश में अधिकांश ऊर्जा उत्पादन तापीय ऊर्जा संयंत्रों के माध्यम से होता है।
- हाइड्रोजन, स्वच्छ एवं प्रदूषणरहित ईंधन का विकल्प है, जिसके उपोत्पाद के रूप में केवल जल ही प्राप्त होता है। इसकी उच्च प्रज्ज्वलन क्षमता के कारण इसका उपयोग रॉकेट ईंधन के रूप में किया जाता है। हाइड्रोजन का उत्पादन तथा भंडारण अत्यधिक खर्चीला तथा कठिन है। तीव्र ज्वलनशील गैस होने के कारण इसे विस्फोटक की श्रेणी में रखा जा सकता है, परंतु नियंत्रित परिवेश में इसकी तीव्र ज्वलनशील क्षमता का उपयोग हरित ऊर्जा के रूप में किया जा सकता है।

- हरित हाइड्रोजन मिशन, इस्पात और सीमेंट जैसे भारी उद्योगों को डी-कार्बनाइज़ करने के लिये आवश्यक है। हाइड्रोजन उत्पादन के सबसे प्रमुख प्रकारों में प्राकृतिक गैस शोधन और इलेक्ट्रोलिसिस (किसी रासायनिक यौगिक में विद्युत-धारा प्रवाहित कर उसके रासायनिक बंधों को तोड़ने की प्रक्रिया) के साथ सौर चालित एवं अन्य जैविक प्रक्रियाएँ शामिल हैं।
- भारत की हरित ऊर्जा आधारित हाइड्रोजन संयंत्र लगाने की यह पहल जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने में सहायक होगी। ये संयंत्र 'ग्रिड स्केल स्टोरेज' समाधान करने के साथ अमोनिया उत्पादन के लिये फीडस्टॉक का भी काम करेंगे। **मिशन का उद्देश्य हाइड्रोजन ऊर्जा का उपयोग कर हरित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना** है।

एयरोपॉनिक तकनीक (Aeroponic Technology)

- एयरोपॉनिक्स **बिना मृदा या समुच्चय माध्यम के वायु तथा नियंत्रित वातावरण में पौधों को उगाने की विधि** है। इस तकनीक में पौधों की जड़ों को किसी पात्र में बंद कर उनकी जड़ों पर पोषक तत्त्वों के घोल का छिड़काव किया जाता है। 'टिश्यू कल्चर' के माध्यम से उगाए गए पौधों की जड़ों के मज़बूत होने के पश्चात् उनका एयरोपॉनिक विधि से विकास किया जाता है।
- पारंपरिक कृषि की तुलना में इसमें कम ऊर्जा तथा जल का उपयोग होता है। इस तकनीक द्वारा पौधों को उगाने तथा वृद्धि में वायु प्रमुख माध्यम के रूप में कार्य करती है, इसलिये इसके रखरखाव की लागत काफी कम होती है। एयरोपॉनिक तकनीक पारंपरिक हाइड्रोपॉनिक्स, एक्वापॉनिक्स तथा इन-विट्रो तकनीक से भिन्न है।
- इस प्रणाली में पौधे की जड़ें पर्याप्त ऑक्सीजन के संपर्क में होती हैं, पौधे उसे आसानी से अवशोषित कर सकते हैं। इससे पौधे रोगमुक्त रहते हैं तथा उनका विकास तीव्र होता है।

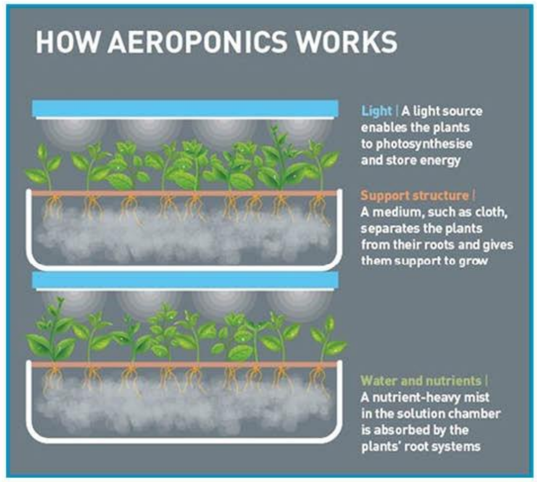

- ध्यातव्य है कि पौधों को रोगों से बचाने के लिये उनकी जड़ों पर प्रयोग की जाने वाली 'मिस्ट' (Mist) को स्टर्लाइज़ किया जा सकता है। यह तकनीक 100% सुरक्षित है तथा जल संरक्षण व मानवश्रम का श्रमसाध्य उपयोग कर पर्यावरण सुरक्षा तथा सतत विकास में सहायक है।
- इस विधि का सबसे बड़ा लाभ सीमित स्थान का सर्वोत्तम उपयोग है। इसके अतिरिक्त, 'एयरोपॉनिक्स' पौधों के विकास, उत्तरजीविता दर तथा परिपक्वता अवधि में सुधार करने के लिये पौधों के क्लोन तैयार करने का आसान एवं प्रभावी तरीका प्रदान करेगी।

06 FEBRUARY 2021

PT CARD

संस्कृति IAS

डेनमार्क की कृत्रिम ऊर्जा द्वीप परियोजना
(Artificial Energy Island Project of Denmark)

- हाल ही में, डेनमार्क ने हरित ऊर्जा को अपनाने के प्रयासों के तहत **उत्तरी सागर में एक कृत्रिम द्वीप** बनाने की योजना को मंज़ूरी दी है। लगभग 34 बिलियन अमेरिकी डॉलर की अनुमानित लागत के साथ शुरू की जाने वाली इस परियोजना को डेनमार्क के इतिहास में सबसे बड़ी परियोजना के रूप में देखा जा रहा है।

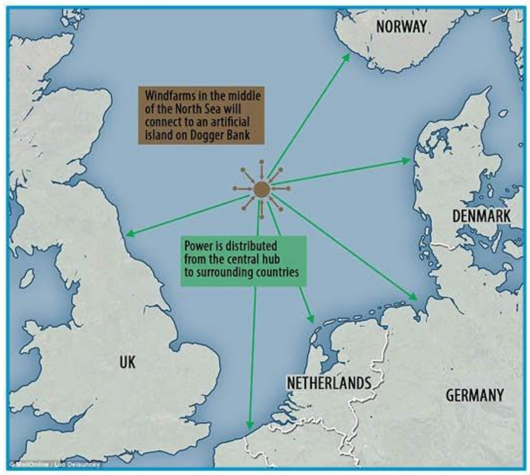

- यह 'ऊर्जा द्वीप' एक ऐसे प्लेटफ़ॉर्म पर आधारित है, जो आसपास के **अपतटीय पवन फार्म** (Offshore Wind Farms) से विद्युत उत्पादन के लिये एक केंद्र के रूप में कार्य करता है। यह परियोजना डेनमार्क तथा उसके पड़ोसी देशों के बीच संपर्क बढ़ाने तथा ऊर्जा वितरण में सहायक होगी। **डेनमार्क ने ऊर्जा द्वीप के संयुक्त उपयोग के लिये पहले से ही नीदरलैंड, जर्मनी और बेल्जियम के साथ समझौता** किया है।
- यह कृत्रिम द्वीप, **उत्तरी सागर में डेनमार्क से 80 किमी. की दूरी पर अवस्थित** होगा, जिसके अधिकांश क्षेत्र पर डेनमार्क का अधिकार होगा। इस परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य बड़े पैमाने पर 'अपतटीय पवन ऊर्जा' का उत्पादन कर यूरोपीय संघ में 3 मिलियन से अधिक घरों की विद्युत आवश्यकताओं को पूरा करना तथा पर्याप्त हरित ऊर्जा भंडारण एवं उत्पादन में सक्षम बनाना है।
- गौरतलब है कि जून 2020 में, डेनिश संसद ने दो ऊर्जा द्वीपों के निर्माण की पहल का फैसला किया था, जो डेनमार्क तथा पड़ोसी देशों को ऊर्जा का निर्यात करने में मदद करेगा। दूसरा प्रस्तावित द्वीप बाल्टिक सागर में अवस्थित है, जिसे **'बोर्नहोम द्वीप'** के नाम से जाना जाता है।

7428085757/58 या मिस्ड-कॉल करें-9555-124-124 www.sanskritiIAS.com

08 FEBRUARY
2 0 2 1

PT CARD

ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड
(Glacial Lake Outburst Flood — GLOFs)

- ग्लेशियल झीलों का निर्माण मुख्यत: अधिक ऊँचाई वाले ग्लेशियर बेसिन में हिमनद, मोरेन या प्राकृतिक अवसाद के चलते जल बहाव में अवरोध उत्पन्न होने के कारण होता है। मोरेन के कारण स्थलाकृतिक गर्त का निर्माण होता है, जिसमें हिमनदों के पिघलने से जल इकट्ठा होने लगता है, परिणामस्वरूप ग्लेशियल झील का निर्माण होता है।

- झील के स्तर में अतिप्रवाह न होने तक हिमनद से जल का रिसाव झील में होता रहता है। **वैश्विक ऊष्मन के कारण जब हिमनदों के पिघलने का आवेग अस्थिर हो जाता है तथा बड़ी मात्रा में झीलों की ओर जल का बहाव होने लगता है तो झीलों में संगृहीत जल अचानक 'आउटबर्स्ट' हो जाता है तथा 'फ़्लैश फ्लड' की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।** इसे 'ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड' के रूप में जाना जाता है। ऐसी घटनाएँ भूस्खलन के कारण अल्पाइन क्षेत्रों में अधिक देखी जाती हैं।
- विश्व भर में होने वाली विनाशकारी घटनाओं के लिये हिमनदों या मोराइन बांधों की विफलता को प्रमुख कारण माना जाता है। कम समयांतराल में बड़ी मात्रा में पानी छोड़ने के कारण इन बहाव क्षेत्रों में बाढ़ की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। वर्षा की तीव्रता, भूस्खलन तथा झीलों व अन्य जल निकायों की भौतिक स्थितियों के बारे में अपर्याप्त आँकड़ों के कारण इनके परिणाम अप्रत्याशित रूप से विनाशकारी होते हैं।
- हाल ही में, उत्तराखंड के चमोली ज़िले में नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन (NTPC) तपोवन विष्णुगढ़ विद्युत परियोजना तथा ऋषि गंगा पॉवर कॉर्पोरेशन लिमिटेड परियोजना, ग्लेशियर आउटबर्स्ट के कारण आई फ़्लैश फ्लड से क्षतिग्रस्त हो गई हैं, इन परियोजनाओं से क्रमश: 520 तथा 13.2 मेगावाट विद्युत का उत्पादन किया जाता है।

7428085757/58 या मिस्ड-कॉल करें-9555-124-124 www.sanskritiIAS.com

09 FEBRUARY 2021

PT CARD

कृषि यांत्रिकी (Agricultural Mechanization)

- मशीनीकृत कृषि या कृषि यांत्रिकी से तात्पर्य कृषि कार्य में मशीनों के प्रयोग से है, जिससे कृषि श्रमिकों की उत्पादकता में वृद्धि होती है। **भारत सरकार द्वारा वर्ष 2014-15 में कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने के लिये सब मिशन ऑन एग्रीकल्चरल मैकेनाइज़ेशन (SMAM) नामक विशेष योजना की शुरुआत की गई थी।**

- इस योजना का उद्देश्य **कस्टम हायरिंग केंद्रों** (CHCs) की स्थापना के माध्यम से छोटे एवं सीमांत किसानों (SMFs) को सस्ती तथा सुलभ कृषि मशीनें उपलब्ध कराना और उच्च तकनीक व उच्च मूल्य वाले कृषि उपकरणों, फार्म मशीनरी एवं बैंकों के लिये हब बनाना तथा इसकी पहुँच से बाहर लोगों तक उन्हें पहुँचाना है। इस योजना के अंतर्गत विभिन्न सब्सिडी प्राप्त कृषि उपकरणों और मशीनों का वितरण भी शामिल है।
- 'कस्टम हायरिंग संस्था' लघु सीमांत किसानों को कृषि मशीनें उपलब्ध कराती है। कृषि क्षेत्र में फसल उत्पादन के लिये उपयोग किये गए इनपुट की दक्षता और प्रभावकारिता में सुधार करने के लिये मशीनीकरण आवश्यक है। मशीनीकरण श्रमसाध्य होने के साथ फसलों की उत्पादकता में भी वृद्धि के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- गौरतलब है कि अब तक 27.5 हज़ार से अधिक कस्टम हायरिंग संस्थानों के माध्यम से 13 लाख से अधिक किसानों को कृषि मशीनों का वितरण किया जा चुका है।

10 FEBRUARY 2021

PT CARD

संस्कृति IAS

आइंस्टीनियम (Einsteinium)

- कैलिफोर्निया स्थित बर्कले प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों ने आवर्त सारणी के 99 परमाणु क्रमांक वाले तत्त्व के गुणों का अध्ययन किया। इसे अल्बर्ट आइंस्टीन के नाम पर 'आइंस्टीनियम' कहा गया है। इस अध्ययन के बाद **पहली बार शोधकर्ता 'तत्त्वों के गुणों' को चिह्नित करने में सक्षम** हुए हैं।

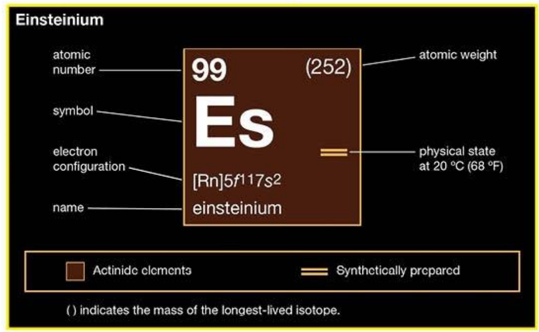

- वैज्ञानिकों के इस दल ने तत्त्व के अधिक स्थिर समस्थानिकों में से एक 'आइंस्टीनियम-254' का अध्ययन किया, जिसका अर्द्ध-जीवनकाल 276 दिन होता है। **आइंस्टीनियम तत्त्व के सबसे सामान्य समस्थानिक 'आइंस्टीनियम 253' का अर्द्ध-जीवनकाल 20 दिन** होता है।
- उच्च रेडियोधर्मिता और सभी समस्थानिकों के अल्प जीवनकाल के कारण इस तत्त्व का क्षरण हो गया है और अब यह प्राकृतिक रूप से नहीं पाया जाता है, किंतु गहन और सटीक रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा इसे निर्मित किया जा सकता है।
- इस तत्त्व की खोज वर्ष 1952 में पहले हाइड्रोजन बम विस्फोट के पश्चात् प्राप्त मलबे से हुई थी। यह विस्फोट दक्षिण प्रशांत महासागर में 'एनीवेटोक एटोल' पर स्थित एलुगेलैब नामक एक द्वीप पर एक परीक्षण के दौरान 'आइवी माइक' नामक एक थर्मोन्यूक्लियर उपकरण में हुआ था, जो नागासाकी में हुए विस्फोट की तुलना में 500 गुना अधिक विनाशकारी था।
- वर्तमान में यह तत्त्व सीमित मात्रा में उपलब्ध है, जिसका उपयोग केवल वैज्ञानिक अनुसंधान के लिये किया जा सकता है। इसे नग्न आँखों से नहीं देखा जा सकता है। इस शोध के बाद वैज्ञानिक, कण त्वरक (Particle Accelerator) द्वारा निर्मित एक सटीक एक्स-रे का उपयोग करते हुए इस तत्त्व के अन्य परमाणुओं के साथ बंधों (Bonds) की जटिलता को समझने में सक्षम हुए हैं।
- इस परमाणु व्यवस्था का अध्ययन कर वैज्ञानिक अन्य तत्त्वों और इसके समस्थानिकों के महत्त्वपूर्ण रासायनिक गुणों का पता लगा सकते हैं, जो परमाणु ऊर्जा उत्पादन और रेडियोफार्मास्युटिकल के लिये उपयोगी हो सकते हैं।

12 FEBRUARY 2021

PT CARD

संस्कृति IAS

सिंधु देश (Sindhu Desh)

- सिंध, पाकिस्तान के दक्षिणी-पूर्वी भाग (सिंधु नदी बेसिन) में स्थित सिंधी बाहुल्य क्षेत्र है। इसके पूर्व में थार का मरुस्थल, पश्चिम में बलूची क्षेत्र, उत्तर में पंजाब प्रांत (पाकिस्तान) तथा दक्षिण में अरब सागर स्थित है। इसकी राजधानी कराची है। क्षेत्रफल के आधार पर यह पाकिस्तान का तीसरा सबसे बड़ा प्रांत है।
- **महाभारत काल में इसे सिंधु देश कहा जाता** था। सिंधु घाटी सभ्यता के मोहनजोदडो, आमरी, कोटदीजी आदि स्थल इसी प्रांत में अवस्थित हैं।
- पाकिस्तान के निर्माण के बाद से ही इस प्रांत में पृथक देश की माँग शुरू हो गई थी। पाकिस्तान सरकार द्वारा इस क्षेत्र के लोंगों पर उर्दू थोपे जाने के कारण वर्ष 1967 में जी.एम. सैय्यद तथा पीर अली मुहम्मद राशिद के नेतृत्व में स्वतंत्र सिंधु देश की माँग उठाई गई थी। हाल ही में (17 जनवरी, 2021 को) जी.एम सैद की 117वीं जयंती मनाई गई।
- वर्ष 1972 में सिंधी भाषा भाषियों द्वारा सिंधु देश नाम से एक पृथक देश बनाए जाने के लिये आंदोलन किया गया। यह आंदोलन बांग्ला भाषा आंदोलन से प्रेरित था। इसके लिये अभी भी पाकिस्तान में कई संगठन जैसे– सिंधु देश लिबरेशन आर्मी, सिंध राष्ट्रीय आंदोलन दल तथा जय सिंध विद्यार्थी फेडरेशन आदि सक्रिय हैं। ध्यातव्य है कि **विश्व सिंधी कांग्रेस-अनरिप्रेज़ेंटेड नेशन एंड पीपुल्स आर्गेनाइज़ेशन (UNPO) का भी सदस्य** है।

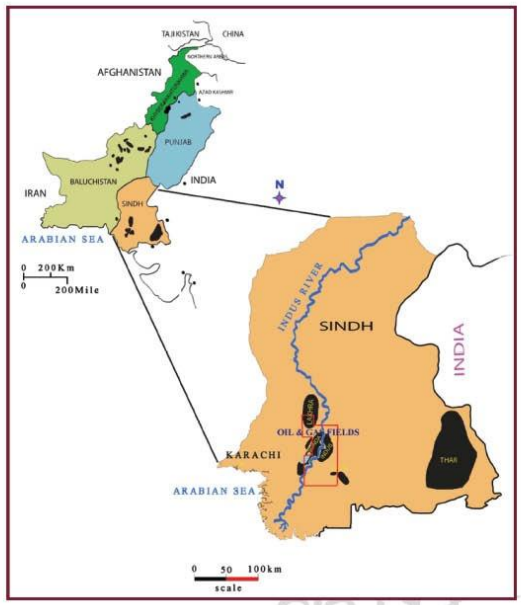

13 FEBRUARY 2021

PT CARD

संस्कृति IAS

तोलप्पावक्कूत्तु (Tholpavakkoothu)

- तोलप्पावक्कूत्तु केरल की एक **आनुष्ठानिक छाया कठपुतली कला** है। तोलप्पावक्कूत्तु का शाब्दिक अर्थ है 'चर्म कठपुतली खेल'। इसमें चमड़े की **कठपुतलियों का प्रदर्शन भद्रकाली के धार्मिक अनुष्ठानों में** किया जाता है। भद्रकाली को केरल में देवताओं की माता के रूप में पूजा जाता है।

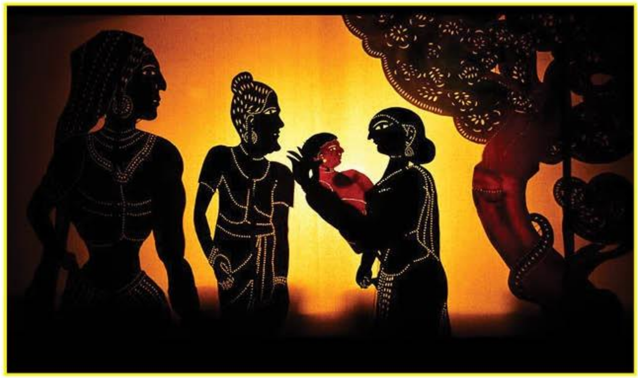

- इस कला का मूल विषय **कंब रामायण पर आधारित** है, जिसका वाचन सामान्यत: **मलयालम और तमिल कुल की बोलियों** में किया जाता है। इस प्रदर्शन में भगवान श्री राम के जन्म से लेकर अयोध्या में उनके राज्याभिषेक तक की घटनाओं का चित्रण किया जाता है।
- छाया कठपुतली का प्रस्तुतीकरण 'कूत्तुमठम' में किया जाता है, जो मंदिर परिसर में निर्मित एक बड़ी नाट्यशाला होती है। कठपुतलियाँ भैंस और हिरण के स्वरूप में होती हैं, इनमें **भैंस बुरे चरित्र को और हिरण भले चरित्र को** निरूपित करते हैं। पहले कठपुतलियाँ हिरन के चमड़ों से बनाई जाती थीं, किंतु अब बकरी के चमड़ों से बनाई जाने लगी हैं। कठपुतलियों को सब्ज़ियों से प्राप्त रंगों से रंगा जाता है क्योंकि ये रंग अधिक टिकाऊ होते हैं।
- आर्य और द्रविड़ संस्कृतियों के एकीकरण का उत्कृष्ट उदाहरण यह कला नौवीं शताब्दी के आस-पास प्रचलन में थी। वर्तमान में यह कला पालक्कड ज़िले के पुलवार परिवारों तक ही सीमित रह गई है। ध्यातव्य है कि इस छाया **कठपुतली नृत्य को पहली बार रोबोट द्वारा संचालित किया जा रहा** है।

15 FEBRUARY
2 0 2 1

PT CARD

गलघोंटू रोग (Hemorrhagic Septicaemia)

- गलघोंटू रोग या रक्तस्रावी सेप्टीसीमिया प्रायः गायों और भैसों में फैलने वाला जीवाणुजनित रोग है। मानसून के पहले या बाद के समय में यह बीमारी सर्वाधिक फैलती है।
- इस बीमारी का प्रसार **'पास्चुरेला मल्टोसीडा'** (Pasteurella Multocida) नामक जीवाणु के संक्रमण से होता है। गायों की अपेक्षा भैसें इस रोग से अधिक प्रभावित होती हैं। पशुओं में इस रोग की पहचान सर्वप्रथम वर्ष 1878 में जर्मनी में बोलिनगर नामक वैज्ञानिक द्वारा की गई थी।

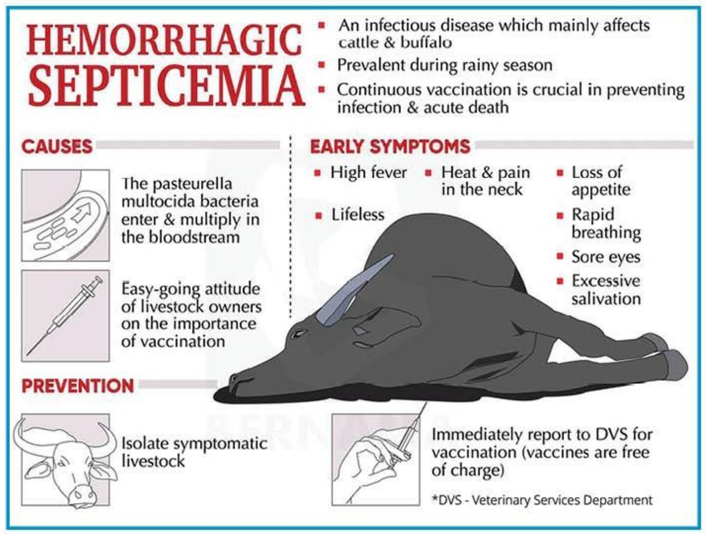

- तेज़ बुखार, मुँह में लार का बार-बार आना, गले में सूज़न, साँस लेने में तकलीफ़ आदि इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं। इसके चलते कभी-कभी पशु की अचानक मृत्यु भी हो जाती है। इसकी रोकथाम हेतु पशुओं को टीका लगाया जाता है, पहला टीका 3 माह में तथा दूसरा टीका 9 माह की आयु में लगाया जाता है।
- इस रोग का सर्वाधिक प्रसार **दक्षिण-पूर्वी एशिया तथा अफ्रीका में** देखने को मिला है। हाल ही में, ओडिशा के कालाहांडी ज़िले के करलापट वन्यजीव अभयारण्य में छह हाथियों की इस रोग के कारण मृत्यु हो गई।